हूण आक्रमण

डॉ0 मकसूद आलम

जिस जाति ने, 165 ई0पू0 में यूह–ची (कुषाण) जाति को चीन की पश्चिमोत्तर सीमा से निकाल कर सम्पूर्ण मध्य–एशिया और भारत की राजनीति को प्रभावित किया था वह हूणों 'हिंग–नू' की थी। कुछ दिनों बाद जनसंख्या की वृद्धि और प्रसार की आकांक्षा से वह पश्चिम की ओर चल पड़ी। आगे बढ़ने पर इसकी दो शाखायें हो गयीं। एक शाखा ने सीधे पश्चिम यूराल पर्वत को पार करके 375 ई0 के लगभग, आधे यूरोप को आक्रांत कर लिया। इसने गाथ जाति को डैन्यूब नदी के दक्षिण ढकेल दिया। गाथों ने रोम–साम्राज्य पर आक्रमण किया। इस गाथ–यूद्ध में रोमन सम्राट वैलेन्स को 378 ई0 में अपने प्राण खोने पड़े। हूण, वोल्गा और डेन्यूब के बीच के सभी प्रदेश पर छा गये। वे यूरोप के लिए भयंकर हौवा हो गये। एक अच्छे नेता के अभाव में हूण तितर–बितर हो गये थे परन्तु अतिला ने आकर हूणों की शक्ति फिर संगठित कर ली और आतंक सारे यूरोप पर फैल गया। 453 ई0 में उसकी मृत्यु से ही यूरोप को त्राण मिला।